आरती श्री रामचंद्र जी की

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव-भय दारुणम् ।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम् ।
कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दरम् ।
पट पीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम् ।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्दनम् ।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम् ।
आजानुभुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषणम् ।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल दल गंजनम् ।
मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ।
एहि भांति गौर असीस सुन सिय सहित हिय हरषित अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली ।

विवरण

जन्म-मरण का भय दूर करने वाले एवं सब पर कृपा करने वाले श्री रामचन्द्र जी को हे मन ! भज । जिनके नए कमल के फूल के समान सुन्दर नयन हैं, मुख कमल जैसा सुन्दर है, उनके हाथ एवं पैर भी कमल रूपी सूर्य जैसा
दीप्तिमान हैं । अनेक काम देव के समान जिनका अमिट रूप है, इनका नया नीला श्याम वर्ण मेघ के समान अति सुन्दर लग रहा है, इनके इस अपरिमित छवि की गणना नहीं की जा सकती ।

इनका पीला वस्त्र ऐसे चमक रहा है मानो बादल की बिजली हो । यह श्री रामचंद्र जी जनक की पुत्री सीता पर, स्वच्छ अनुराग रखते हैं, एवं उनके वर भी हैं । दैत्य वंश का संहार करनेवाले एवं गरीबों पर दया

करने वाले ईश्वर श्री रामचंद्र जी को भजें ।

आनन्द को देनेवाले ये रघुनन्दन माता कौशल्या के पुत्र हैं तथा राजा दशरथ के नन्दन हैं । इनके सिर पर मुकुट एवं कानों में कुण्डल, माथे पर चन्दन तथा आभूषणों से सुसज्जित इनके अंग बड़े ही सुन्दर लग रहे हैं । धनुष एवं बाण को धारण करने वाले आप श्री रामचंद्र जी ने खर एवं दूषण का भी संहार किया है । तुलसीदास जी कह रहे हैं कि भगवान एवं मुनियों के मन को आप आनन्दित करने वाले हैं, मेरे हृदय में आप निवास कीजिए एवं हमारे अन्दर जितने भी कामादि दोष विकार हैं उन्हें मिटा दीजिए ।

पार्वती जी कह रही हैं, सीता से कि तुम्हारे मन में जो अभिलाषा है, सुन्दर सांवले वर राम को पाने को वह अभिलाषा तुम्हारी पूरी होगी । यह करुणा के निधान, स्नेही राम तुम्हारे ही हैं । माता पावेती के मुख से ऐसा आशीर्वाद सुनकर सीता अपने सखियों के सहित बहुत ही खुश हुईं । तुलसीदास कह रहे हैं कि माता पार्वती की बार - बार पूजा करके एवं अति आनन्दित मन से मन्दिर को चलीं गईं ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.